

# शिव चालीसा

## (Shiv Chalisa)

॥ शिव चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवन,  
मंगल मूल सुजान ।  
कहत अयोध्यादास तुम,  
देहु अभय वरदान ॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरिजा पति दीन दयाला ।  
सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥

भाल चन्द्रमा सोहत नीके ।  
कानन कुण्डल नागफनी के ॥

अंग गौर शिर गंग बहाये ।  
मुण्डमाल तन क्षार लगाए ॥

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे ।  
छवि को देखि नाग मन मोहे ॥ 4 ॥

मैना मातु की हवे दुलारी ।  
बाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी ।

करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥

नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे ।  
सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥

कार्तिक श्याम और गणराऊ ।  
या छवि को कहि जात न काऊ ॥ 8 ॥

देवन जबहीं जाय पुकारा ।  
तब ही दुख प्रभु आप निवारा ॥

किया उपद्रव तारक भारी ।  
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ॥

तुरत षडानन आप पठायउ ।  
लवनिमेष महँ मारि गिरायउ ॥

आप जलंधर असुर संहारा ।  
सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥ 12 ॥

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ।  
सबहिं कृपा कर लीन बचाई ॥

किया तपहिं भागीरथ भारी ।  
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥

दानिन महँ तुम सम कोउ नाही ।  
सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥

वेद नाम महिमा तव गाई ।

अकथ अनादि भेद नहिं पाई ॥ 16 ॥

प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला ।  
जरत सुरासुर भए विहाला ॥

कीन्ही दया तहं करी सहाई ।  
नीलकण्ठ तब नाम कहाई ॥

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा ।  
जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥

सहस कमल में हो रहे धारी ।  
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥ 20 ॥

एक कमल प्रभु राखेउ जोई ।  
कमल नयन पूजन चहं सोई ॥

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ।  
भए प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥

जय जय जय अनन्त अविनाशी ।  
करत कृपा सब के घटवासी ॥

दुष्ट सकल नित मोहि सतावै ।  
भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै ॥ 24 ॥

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो ।  
येहि अवसर मोहि आन उबारो ॥

लै त्रिशूल शत्रुन को मारो ।

संकट से मोहि आन उबारो ॥

मात-पिता भ्राता सब होई ।  
संकट में पूछत नहिं कोई ॥

स्वामी एक है आस तुम्हारी ।  
आय हरहु मम संकट भारी ॥ 28 ॥

धन निर्धन को देत सदा हीं ।  
जो कोई जांचे सो फल पाहीं ॥

अस्तुति केहि विधि करैं तुम्हारी ।  
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥

शंकर हो संकट के नाशन ।  
मंगल कारण विघ्न विनाशन ॥

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं ।  
शारद नारद शीश नवावैं ॥ 32 ॥

नमो नमो जय नमः शिवाय ।  
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ॥

जो यह पाठ करे मन लाई ।  
ता पर होत है शम्भु सहाई ॥

ऋनियां जो कोई हो अधिकारी ।  
पाठ करे सो पावन हारी ॥

पुत्र हीन कर इच्छा जोई ।

निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ॥ 36 ॥

पण्डित त्रयोदशी को लावे ।  
ध्यान पूर्वक होम करावे ॥

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा ।  
ताके तन नहीं रहै कलेशा ॥

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे ।  
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे ॥

जन्म जन्म के पाप नसावे ।  
अन्त धाम शिवपुर में पावे ॥ 40 ॥

कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी ।  
जानि सकल दुःख हरहु हमारी ॥

### ॥ दोहा ॥

नित्त नेम कर प्रातः ही,  
पाठ करौं चालीसा ।  
तुम मेरी मनोकामना,  
पूर्ण करो जगदीश ॥

मगसर छठि हेमन्त ऋतु,  
संवत चौसठ जान ।  
अस्तुति चालीसा शिवहि,  
पूर्ण कीन कल्याण ॥

# Shiv Chalisa

(in English)

**|| doha ||**

jay ganesh girija suvan,  
mangal mool sujaan ||  
kahat ayodaas tum,  
dehu abhay bhooshana ||

**|| chaupae ||**

jay girija pati deen dayaala ||  
sada karat santan pratipaala ||

bhaal chandrama sohat neeke ||  
kaanan kundal naagaphanee ke ||

ang gaur shree ganga bahaye ||  
mundamaal tan kshaaraprasthaan ||

vastr kal baaghambar sohe ||  
chhavi ko dekhi naag man mohe || 4 ||

maina maatu kee have dulaaree ||  
baam ang sohat chhavi nyaaree ||

kar trishool sohat chhavi bhaaree ||  
karat sada shatrun kshayakaaree ||

nandi ganesh sohai tahan kaise ||

saagar madhy kamal hain aise ॥

kaartik shyaam aur garaaro ॥  
ya chhavi ko kahi jaat na kooo ॥ 8 ॥

devan jabahin jaay bulaay ॥  
tab hee dukkh prabhu aap nivaara ॥

achhoota taarak bhaaree ॥  
devan sab mili tumahin jauharee ॥

turat shaadaan an aap pathaayau ॥  
lavanimesh mahan maari girayau ॥

aap jalandhar asur sanhaara ॥  
suyash tumhaar vidit sansaara ॥ 12 ॥

tripuraasur san yuddh machaee ॥  
sabahin krpa kar leen bachaee ॥

kiya tapahin bhaageerath bhaaree ॥  
poorab pratigya taasu puraari ॥

daanin mahan tum sam kooo nahin ॥  
sevak stuti karat sadaahin ॥

ved naam mahima tav gae ॥  
akath anaadi bhed nahin pae ॥ 16 ॥

prakatee udadhi math mein naav ॥

jarat surasur bhaye vihaala ॥

keenhee daya tahan karee sahaee ॥  
neelakanth tab naam kahai ॥

vandan raamachandr jab keenha ॥  
jeet ke lank vibheeshan deenha ॥

sahas kamal mein ho rahe dhaaree ॥  
keenh pareeksha tabahin puraari ॥ 20 ॥

ek kamal prabhu raakheu joe ॥  
kamal nayan poojan chahan soi ॥

kathin bhakti darshan prabhu shankar ॥  
bhe vishesh aalekh var ॥

jay jay jay anant avinaashee ॥  
karat krpa sab ke ghatavaasee ॥

dusht sakal nit mohi sataavai ॥  
bhramat rahaun mohi chain na aavai ॥ 24 ॥

traahi traahi main naath pukaaro ॥  
yehi avasar mohi an ubaaro ॥

trishool shatru ko maaro ॥  
sankat se mohi an ubaro ॥

maata-pita bhraata sab hoee ॥



sankat mein prashnat nahin koe ॥

svaamee ek hain aasa vivaah ॥  
ain harahu mam sankat bhaaree ॥ 28 ॥

dhan nirdhan ko det sada heen ॥  
jo koee jaanche so phal pae ॥

astuti kehi vidhi karan vivaah ॥  
kshamahu naath ab viphal hamaaree ॥

shankar ho sankat ke naashan ॥  
mangal kaaran vighn vinaashan ॥

yogee yati muni dhyaanan ॥  
sharad naarad chamak navaanvai ॥ 32 ॥

namo namo jay namah shivaay ॥  
sur brahmaadik paar na paay ॥

jo yah paath kare man laee ॥  
ta par hot hai shambhu sahaay ॥

rniyaan jo koee ho adhikaaree ॥  
paath so kare param paavan ॥

putr heen kar ichchha joe ॥  
nishchay shiv prasaad tehi hoi ॥ 36 ॥

pandit trayodashee ko laave ॥

dhyaan den hom karaave ॥

trayodashee vrat karai sada ॥  
taake tan nahin rahai kalesha ॥

dhoop deep naivedy chadaave ॥  
shankar sammukh paath sunaave ॥

janm janm ke paap naasaave ॥  
antim dhaam shivapur mein paave ॥ 40 ॥

kahate hain ayodhyaadaas ka vivaah ॥  
jaani sakal dukkh harahu hamaaree ॥

**॥ doha ॥**

nitt nem kar subah hee,  
paath karaun chaaleesa ॥  
tum mere man,  
poorn karo jagadeesh ॥

magasar chhathi hemant rtu,  
sanvat chausath jaan ॥  
astuti chaaleesa shivahi,  
poorn keen kalyaan ॥

\*\*\*\*\*